पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 16.06.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

जम्मू चलो जम्मू चलो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद जम्मू कश्मीर

युवक चरित्र निर्माण शिविर

स्थान: आर्य समाज, जानीपुर, जम्मू

उद्घाटन:- रविवार 22 जून प्रात: 11 बजे

मुख्य अतिथि: डॉ. अनिल आर्य द्वारा

भव्य समापन समारोह

रविवार 29 जून प्रात: 10 से 1 बजे तक

- सुभाष आर्य, 09419301915

वर्ष-30 अंक-26 आषाढ़-2071 दयानन्दाब्द 190 16 जून से 30 जून 2014 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.06.2014, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में

विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का भव्य शुभारम्भ

राष्ट्र चरित्रवान व्यक्तियों से ही बनता है - सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह

सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अलका चौधरी का अभिनन्दन करते हुए डॉ. अनिल आर्य व श्री मायाप्रकाश त्यागी। द्वितीय चित्र में श्री माया प्रकाश त्यागी का अभिनन्दन करते श्री आनन्द चौहान, श्री अजय चौहान व डॉ. सत्यपाल सिंह आदि।

नोएडा। रविवार, 8 जून 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में ''विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर'' का ऐमेटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा में शुभारम्भ हो गया। शिविर में 275 युवक शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। योगासन, प्राणायाम, दण्ड बैठक, लाठी, तलवार, जूडो-कराटे, लेजियम, उम्बल, स्तूप व यज्ञ-भारतीय संस्कृति की जानकारी व शिक्षण प्रदान किया जायेगा।

समारोह के मुख्य अतिथि सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह ने कहा कि राष्ट्र चरित्रवान व्यक्तियों से ही बनता है, ईट पत्थरों से नहीं बनता। आज के युग में रिश्ते कमजोर होते जा रहे हैं। विश्वास कम होता जा रहा है, यह चरित्र निर्माण शिविर मानवीय मूल्यों की पुर्नस्थापना करेंगे, व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ कर समाज व राष्ट्र को मजबूत करेंगे। मैंने भी 1974 में एक शिविर में भाग लिया था। आज मैं जो भी हूँ वह महर्षि दयानन्द व आर्य समाज की बदौलत हूँ। उन्होंने कहा कि आर्य समाज चरित्रवान-आदर्श नागरिक बना रहा है जिससे राष्ट्र का भविष्य अच्छे हाथों में होगा। ऐमेटी शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री आनन्द चौहान ने कहा कि महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं को जीवन में अपना कर ही कल्याण हो सकता है।

आर्य नेता श्री मायाप्रकाश त्यागी ने ओ३म ध्वज फहरा कर शिविर का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि वेद कहता है मनुर्भव हमें मनुष्य बनने का प्रयत्न करते रहना चाहिये।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि संस्कारित युवा शक्ति राष्ट्र का आधार है, आर्य युवक शिविर नयी पीढ़ी को दिशा देकर सृजनात्मक विकास करेंगे। इस समय 18 शिविर चल रहे हैं।

इस अवसर पर शिक्षाविद श्री अजय चौहान, डा. डी.के. गर्ग, श्री राजीव कुमार परम, श्री महेन्द्र भाई, श्री रामकुमार सिंह, श्री प्रमोद चौधरी, श्रीमती गायत्री मीना, श्री रणसिंह राणा, श्री विकास गोगिया, श्री प्रवीन आर्य, श्री सुनील गर्ग, श्री सौरभ गुप्ता, कै. अशोक गुलाटी, डा. वीरपाल विद्यालंकार, श्री अमीरचन्द रहेजा, श्री सुरेश आर्य, श्री त्रिलोक आदि उपस्थित थे। आचार्य भानुप्रताप शास्त्री (बरेली) के मधुर भजन हुए। आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ सम्पन्न करवाया।

एमेटी शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री आनन्द चौहान का अभिनन्द करते डॉ. सत्यपाल सिंह, डॉ. अनिल आर्य, श्री विकास गोगिया व श्री प्रमोद चौधरी व सभागार का सुन्दर दृश्य

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नई सरकार से देशवासियों में नई आशाओं का संचार-

'बेरोजगारी, सामाजिक अपराधा और नई केन्द्रिय सरकार'

-मनमोहन कुमार आर्य

आज देश में सर्वत्र मोदी सरकार की चर्चा है। अच्छे दिन आने वाले हैं का नारा मोदी जी ने बुलन्द किया था जिसे देश ने स्वीकार किया और उन्हें विजय प्रदान की। उनकी सरकार केन्द्र में स्थापित हो गई है। अब मोदीजी का जनता से किये गये वादें पूरे करने का समय आ गया है। हम समझते हैं कि आज देश के समस्त युवा बेरोजगार मोदीजी की ओर आंखे लगायें हुए हैं और आशा कर रहे हैं कि कब उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार रोजगार मिल सकेगा। हमने विगत दिनों ''क्या अच्छे दिन आ गये हैं?'' शीर्षक से एक लेख लिखा था जिसे अनेक पाठकों ने पसन्द किया। प्रतिक्रियायों में एक पाठक ने हमें बेरोजगारी और अपराध पर एक लेख लिखने का अनुरोध किया जिसका परिणाम यह लेख है। हम जानते हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथ में जादू की कोई छड़ी नहीं है कि जिससे वह देश की सभी ज्वलन्त समस्याओं को हल कर सके। तथापि प्रधानमंत्री व उनकी सरकार योजनायें बना सकती है और उन्हें क्रियान्वित भी करा सकती है। भ्रष्टाचार न हो तो योजनाओं का लाभ अधिक लोगों को मिलता है और भ्रष्टाचार के कारण योजनाओं का अधिकांश धन नेताओं, सरकारी अधिकारियों व ठेकेदार आदि की जेबों में चला जाता है। प्रधानमंत्री जी को योजनायें भी बनानी है और भ्रष्टाचार पर अंकुश भी लगाना है। 'यथा राजा तथा प्रजा' का सिद्धान्त सर्वत्र लागू होता है। प्रधानमंत्री जी की सत्यनिष्ठा व ईमानदारी जगजाहिर है और उनके पास गुजरात के 12 वर्षों तक मुख्यमंत्री रहने और वहां उन्नति व प्रगति की क्रान्ति करने का अनुभव भी है। वह जानते हैं कि भ्रष्टाचार दूर कैसे करना है। निश्चित रूप से से कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा और उस धन से देश के लोगों को लाभ पहुंचेगा। हमें लगता है कि अभी 100 दिन तक प्रतीक्षा करनी होगी और यह देखना होगा कि इसके बाद सरकार की इन दिनों की घोषणायें और उपलब्धियां क्या हैं? भ्रष्टाचार कम हुआ या नहीं, इस बारे में संकेत क्या हैं?, सरकार के नेताओं के इरादे क्या हैं व उनका किस प्रकार का व्यवहार है। इससे अनुमान लग जायेगा कि आने वाले दिन जनता की आशाओं के अनुरूप होगें या नहीं?

बेरोजगारी पर श्री नरेन्द्र मोदी जो योजनायें बना रहे हैं वह तो बनायेंगे ही, इसके साथ हम समझते हैं कि उन्हें एक विशेषज्ञों की बहुसदस्यीय समिति बनानी चाहियें। इसके सदस्य वह लोग हों जिनके पास इनका पर्याप्त ज्ञान व अनुभव हो। उनसे कहा जाये कि वह व्यापक रूप से विचार करें और सरकार को शीघ्रातिशीघ्र सुझाव व सिफारिश प्रस्तुत करें कि बेरोजगारी की समस्या कम से कम समस्य में कैसे हल की जाये व उसकी याजनायें क्या हों? भ्रष्टाचार विषयक कानून को अधिक कारगार बनाया जाये और ऐसी व्यवस्था की जाये कि कोई भ्रष्टाचार करने की बात सोच भी न सके। करने से क्या नहीं होता? ईश्वर दिखाई नहीं देता, वैज्ञानिक लोगों ने भी उसके अस्तित्व को अस्वीकार तक कर दिया है परन्तु प्रयत्न करने, साधना और उपासना करने तथा दृण निश्चय कर इस काम में लग जाने पर साधको व उपासको को वह प्राप्त हो जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती मोदीजी की तरह गुजरात से ही आये थे। ईश्वर साक्षात्कर कर ही वह देश व संसार के धार्मिक सुधार के कार्य में प्रवृत्त हुए थे और उन्हें सफलता भी मिली थी। उनका सक्रिय कार्यकाल सन् 1860 से सन् 1883 तक ही रहा और इस 23 वर्ष की अवधि में उन्होंने संसार में आध्यात्मिक और सामाजिक क्रान्ति की। क्या आज कोई मूर्तिपूजा को तर्कसंगत, वेदसंगत, घोषणाओं के अनुरूप परिणामकारी सिद्ध कर सकता है?, कदापि नहीं। इसी प्रकार संसार की सभी पुस्तकों में पूर्ण सत्य केवल और केवल मात्र ईश्वरीय ज्ञान '''वेद''' में ही है। अन्य धार्मिक व सामाजिक ग्रन्थों में अनेकानेक असत्य, अज्ञान व अनुचित बातें दिखाई व बताई जा सकती हैं। यह स्वामी दयानन्द की दृण इच्छा शक्ति व साधना का परिणाम है। इसका तात्पर्य है कि ईमानदारी से कार्य करने पर आशा के अनुरूप परिणाम प्राप्त किया जा सकता हे। यहां हम सरकार द्वारा एसआईटी (SIT) बनायें जाने का स्वागत करते हैं। इसका कार्य विदेशों में अवैध रूप से राजनीतिज्ञ, व्यवसायिक घरानों व अन्यों द्वारा जमा करायें गये लाखों करोड़ रूपयों के कालेधन को भारत लाये जाने के लिए प्रयास करना है। हम समझते हैं कि इसमें पूर्ण या आंशिक सफलता तो मिलेगी ही। इस धन का प्रयोग बेरोजगारी दूर करने, आधारभूत ढांचा तैयार करने, विद्युत का उत्पादन में वृद्धि, ऐसे उद्योग स्थापित करने जिनसे अधिक से अधिक लोगों को व्यवसाय प्राप्त हो, आदि कार्यों में व्यय किया जा सकता है।

अब कुछ चर्चा अपराधों पर भी करते हैं। जिस समाज में जितनी अज्ञानता, सामाजिक असमानता व बेराजगारी आदि होगी वहां अपराध उतने ही अधिक होगें। दण्ड व्यवस्था की खामियां व कमजोरियां भी अपराध को बढ़ाती हैं। हमारे शासकों का निष्पक्ष व्यवहार करना व अपराधियों को शीघ्रातिशीघ्र कठोर दण्ड दिलवाना भी अपराधों को समाप्त करने का एक तरीका है। सम्प्रति हम दुनियां के सभी देशों की न्याय व दण्ड व्यवस्था का अध्ययन कर अपनी न्याय व दण्ड व्यवस्था को समय के अनुरूप बनाने का कार्य कर सकते हैं। इसके साथ सरकार को शिक्षा पर भी ध्यान देना होगा। शिक्षा का सम्बन्ध संस्कारों से है। आज की स्कूली शिक्षा संस्कारविहीन है। इसे बदलना व इसमें परिवर्तन करना होगा जिससे यह समय के अनुरूप हो सके। इस कार्य में महर्षि दयानन्द के शिक्षा विषयक विचारों से लाभ उठाया जा सकता है। हमने महर्षि के विचारों व सिद्धान्तों का अध्ययन करने का प्रयास किया है। इस अध्ययन से यह तथ्य सामने आता है कि यदि हमें देश की सर्वांगीण उन्नति करनी है तो उसमें संस्कारों, ईश्वरोपासना-सन्ध्या, अग्निहोत्र-हवन, माता-पिता की सेवा, आचार्य की सेवा व सत्कार रूपी पूजा, सभी प्राणियों के प्रति मित्र भाव व उनके जीवनयापन व भोजन में यथासम्भव सेवा-सहायता, उनके प्रति पूर्ण अहिंसा का भाव, मांसाहार को एक अपराध मानकर भारतीय दण्ड संहिता में कठोर दण्ड का प्राविधान करना जिसका कारण प्राणियों को भी जीने का अधिकार है और किसी को उनके प्राण हरण या उन्हें पीड़ा पहुंचाने की अनुमति नहीं दी जा सकती, अतिथि जो विद्वान, ज्ञानी, किसी शिक्षा सम्बन्धी विषय के विशेषज्ञ हों, उनका भी अपने माता-पिता, सगे-सम्बन्धियों की तरह सम्मान, सेवा व आार्थिक सहायता आदि के अध्ययन व अभ्यास को शिक्षा, education व विद्याध्ययन व स्कूली पाठ्यक्रम से जोड़ना होगा। योग भी ईश्वर की उपासना का विधिपूर्वक करने को कहा जाता है। आसन योग के आठ अंगों में से एक अंग है। जब यह सब शिक्षा से जुड़ जायेगें और सारे देश में अनिवार्य, निःशुल्क तथा सबके लिए समान शिक्षा होगी, तो अपराध में गिरावट आना आरम्भ हो जायेगा। शिक्षा में पाखण्डों के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिये। सरकार को चाहिये कि सरकारी व्यय पर गुरूकुलों को स्थापित कर उनका संचालन करें यह भी लोगों को संस्कार देने के साथ प्राचीन भारतीय संस्कृत साहित्य व संस्कृति व सभ्यता के संरक्षण में उपयोगी होगा। जब सरकार मदरसों व अन्य अल्पसंख्यक संस्थाओं को आर्थिक सहायता दे सकती है तो उसे समान रूप से गुरूकुलों आदि को भी स्थापित व संचालित करने के साथ देश भर में आर्य समाज व व्यक्ति विशेषज्ञों द्वारा संचालित वैदिक गुरूकुलों की भी भरपूर आर्थिक सहायता करनी चाहिये जिससे देश में अच्छा वातावरण बनेगा और अपराध कम होगें।

अपराध की प्रवृति का जन्म अज्ञान व अशिक्षा से ही प्रायः होता है। कुछ पूर्व संस्कारों की प्रवृत्ति भी इसका कारण है। आज अपराधियों के गिरोह बने हुए हैं। वह युवकों को गुमराह कर उनकी अज्ञानता व विवेकहीनता का लाभ उठाते हैं। यदि सरकार में दृण इच्छा शक्ति हो तो इस पर विजय प्राप्त की जा सकती है। आजकल कुछ कारण ऐसे हैं जिनमें सरकार भी अपराधों में कुछ-कुछ लिप्त हो जाती है। सब जानते हैं कि शराब व धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकर है। यह सब होने पर भी सरकार इनके उत्पादन व निर्माण की अनुमति देती है और इनसे राजस्व प्राप्त करती है। किसी भी सभ्य समाज में इन दोनों चीजों का होना अनुचित व हानिकर होता है। इनके प्रयोग से मनुष्य का चरित्र गिरता है और उनमें अपराध की प्रवृत्ति को बढ़वा मिलता है। जिस प्रकार से किसी बुरी आदत को छोड़ने में कठिनता होती है उसी प्रकार सरकार के लिए भी कठिनाई हो सकती है। हमें पता नहीं कि संसार के किन-किन देशों में पूर्ण या आंशिक नशाबन्दी है, कहीं है भी या नहीं। यदि कहीं भी नहीं है तो यह दुःखद स्थिति है। यदि कहीं हो, तो जहां नशाबन्दी है वहां के अपराधों के आंकड़े व जहां नशाबन्दी नहीं है, वहां के अपराधों के आकड़ों के आधार पर नशाबन्दी का अपराध से रिश्ते को जाना जा सकता है। सरकार का काम है कि मद्यनिषेध की नीति बनाकर सामाजिक संगठनों को स्वैच्छिक रूप से प्रचार द्वारा नशे के आदि व अभ्यस्त लोगों को इससे छुड़ाने के लिए प्रचार करे और नई पीढ़ी को नशे के नरक में जाने से रोकने के उपाय करे जिससे भविष्य में अपराधों में कमी हो सके और एक स्वस्थ, निरोग, बलवान, बुद्धिमान भारत बन सके।

अपराधियों के बारे में विचार करने पर एक तथ्य यह भी सामने आता है कि हमारे देश में अशिक्षा एवं निर्धनता व्याप्त है। कई लोग दो समय का अपना भोजन ही प्राप्त नहीं कर पाते हैं, फिर वह स्कूल जाने की तो सोच ही नहीं सकते। ऐसे लोगों में से कुछ अपराधी बन जाते हैं। ऐसे लोगों को सुधारने के लिए सरकार व पुलिस को नर्मी से काम लेना चाहिये। विवशता में किया गया अपराध-अपराध नहीं होता। दूसरे प्रकार के लोग वह हैं जो बचपन से ही धनी परिवारों से सम्बन्धित रहे हैं और अपने बुरे संस्कारों, बड़ी-बड़ी इच्छाओं की पूर्ति हेतु अपराध करते हैं। ऐसे लोगों के प्रति सरकार व पुलिस को सख्त होना चाहिये परन्तु अधिकांशतः ऐसे लोगों का कोई कुछ नहीं बिगाड़ता। इसका कारण उन लोगों के प्रभावशाली राजनितिज्ञयों से रसूकों का होना हैं, उनके पास पैसा है, वह अपने बुरे कर्मों को दबा सकते हैं। ऐसे लोग जब लम्बी अवधि के लिए जेल में होगें तब जनता को न्याय मिल सकता है। अन्यथा आम व्यक्ति ऐसे लोगों का ही अपराधी सहयोगी बन जाता है। यहां मानव धर्म शास्त्र मनुस्मृति से भी प्रेरणा ली जा सकती है जहां कहा गया है कि जो जितना बड़ा, शिक्षित, धनवान, अधिकार सम्पन्न व प्रीाावशाली हो उसे अशिक्षित व निर्धन की तुलना में अधिक व कई गुणा दण्ड मिलना चाहिये। महर्षि दयानन्द इस विचार व दण्ड व्यवस्था के समर्थक थे। इससे लाभ उठाया जा सकता है। यहां यह कहना भी उपयुक्त होगा कि यदि किसी अपराध को करने वाले को कड़ा दण्ड दिया जाता है तो अनेक लोग उस उदाहरण के डर कर अपराध करना छोड़ देते हैं या अपराध करने में प्रवृत्त नहीं होते। इससे एक व्यक्ति को दिया गया कठोर दण्ड समाज व देश से अनेकों अपराधियों व अपराध में प्रवृत्त होने वालों को अपराध से बचाता है, इसका भी दण्डाधिकारियों व विधि निर्माताओं को ध्यान रखना चाहिये।

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का ज्ञान व अनुभव का स्तर ऐसा है कि वह सभी बातों को भली प्रकार से समझते हैं। वह एक गरीब परिवार से आयें हैं। उन्होंने शून्य से शिखर तक का सफर किया है। देश के प्रत्येक वर्ग में ही नहीं अपितु सारे संसार में उनकी चर्चा है और उनके नाम का डंका सभी दिशाओं में बज रहा है। वह सारी दुनिया के आदर्श दिखाई दे रहे हैं। एक व्यक्ति 18 से 19 घंटे काम करने की घोषणा करता है, कहता है कि मैं पुरूषार्थ की पराकाष्ठा कर दूंगा, हमारी पहली प्राथमिकता गरीबों का उत्थान है, जीवन एक हर क्षण और शरीर का कण-कण देश व देशवासियों को समर्पित है। हम समझते हैं कि आज तक भारत में उनके जैसा प्रधानमंत्री नहीं हुआ जिसने ऐसी बातें की हों। उनसे देश को बहुत आशायें हैं। वह जो कह रहे हैं, हम भी समझते हैं कि वह अपने वचनों को पूरा करने में अवश्य ही सफल होगें।

- 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोनः 09412985121

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् मध्य प्रदेश का प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

सुसंस्कृत-संस्कारित युवा पीढ़ी का निर्माण करेगा आर्य समाज - राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य

परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार मंच संचालन करते हुए व मंच पर आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, श्री राम कुमार सिंह, डॉ. वीर पाल विद्यालंकार, डॉ. अनिल आर्य, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी ऋतिस्पति आदि। द्वितीय चित्र में विधायक श्री महेन्द्र हार्डिया का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य।

इन्दौर, रविवार, 1 जून 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् मध्य प्रदेश के तत्वावधान में गत एक सप्ताह से चल रहे ''राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ'' का आर्य समाज, संचार नगर में भव्य समापन हो गया। हजारों श्रद्वालुओं ने यज्ञ में आहूति डाल कर राष्ट्र रक्षा का संकल्प लिया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने कहा कि खाया हुआ अपना नहीं होता अपितु पचाया हुआ अन्न अपना होता है, ऐसे ही कमाया हुआ धन अपना नहीं होता अपितु परोपकार में लगाया हुआ धन अपना होता हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज नयी युवा पीढ़ी को सुसंस्कृत व संस्कारित करने का देश भर में अभियान चलायेगी, इसके लिये युवक चरित्र निर्माण शिविर आयोजित किये जायगे। उन्होंने जम्मू कश्मीर से धारा 370 अविलम्ब समाप्त करने की मांग की। डा.आर्य ने कहा कि देशद्रोही उमर अब्दुला की सरकार को भंग करके उसे सेना के हवाले किया जाये। देश की एकता अखण्डता को चुनौती देने वालों को कदापि माफ नहीं किया जा सकता। आंतकवादियों व उनके संरक्षकों को कुचलना मोदी सरकार की पहली चुनौती है।

रोहतक से पधारे आर्य संन्यासी स्वामी आर्य वेश ने कहा कि चरित्रवान युवा ही देश को बदलेंगे। आर्य समाज ने राष्ट्र की एकता के लिये, देश की आजादी के लिये उल्लेखनीय कार्य किया लेकिन अभी उसकी रक्षा करने का दायित्व आर्य युवकों पर है। मुख्य अतिथि विधायक श्री महेन्द्र हार्डिया व श्री सुदर्शन गुप्ता ने कहा कि आर्य समाज से प्रेरणा पाकर हम यहां पंहुचे हैं आज फिर पाखण्ड अन्धविश्वास सिर उठा रहे है उसके लिये आम जनता को जागृत करने की जिम्मेदारी आर्य जनो की है ।

प्रदेश अध्यक्ष आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार ने कहा कि परिषद् पूरे मध्य प्रदेश में नशे और अश्लीलता के विरूद्व अभियान चलायेगी तथा युवा शक्ति को सामाजिक बुराईयों से बचाने का कार्य करेगी ।

इस अवसर पर डा.सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), राष्ट्रीय कवि सारस्वत मोहन मनीषी, श्री रामकुमार सिंह (दिल्ली), डा.वीरपाल विद्यालंकार (गाजियाबाद), आचार्य सन्दीप वेदालंकार, श्री कमल आर्य (नागदा), स्वामी ऋतस्पति परिव्राजक (होशंगाबाद), डा.आनन्द (गंगोत्री), स्वामी शंकरमुनि (गौरखपुर), पं.अमरसिंह वाचस्पति (राजस्थान), डा.उमाशंकर योगाचार्य (गुजरात), आचार्य रजनीश (भोपाल), ऋचा शास्त्री (झारखण्ड), मनीषा विद्यालंकार (ग्वालियर), पं. हरिनारायण देवास, शिवमुनि (विदिशा), ओमप्रकाश आर्य (रायसेन), गायत्री सोंलकी, पं.भवानी कश्यप, कैलाश खण्डेलवाल आदि उपस्थित थे। एक अत्यन्त उत्साह जोश के साथ आर्य युवक व आर्य जन विदा हुए।

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार व आचार्य संदीप वेदालंकार का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य व स्वामी आर्यवेश जी। द्वितीय चित्र में विधायक श्री सुदर्शन गुप्ता का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य, आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार आदि।

फरीदाबाद युवक चरित्र निर्माण शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न

रविवार 8 जून 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, फरीदाबाद के तत्वावधान में दिनांक 1 जून से 8 जून तक 2014 तक राजकीय उच्चतम माध्यामिक विद्यालय, नम्बर-3, एन.आई.टी. फरीदाबाद में युवक चरित्र निर्माण शिविर का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंच पर मुख्य अतिथि डॉ. अनिल आर्य, डॉ. वीर पाल विद्यालंकार, श्री राम कुमार सिंह, श्री रामकृष्ण शास्त्री व सामने आर्य युवक व्यायाम प्रदर्शन करते हुए। प्रधान शिक्षक श्री सत्यपाल शास्त्री के निर्देशन में श्री वीरेन्द्र योगाचार्य, श्री सुधीर कपूर, श्री दुर्गाप्रसाद, श्री सत्यपाल रहेजा, श्री मनोज सुमन आदि ने शिविर को सफल बनाया। शिविर संरक्षक डॉ. सत्यदेव गुप्ता, एस्कोर्ट्स युनियन के महामन्त्री श्री वजीर सिंह डागर, श्री नन्दलाल कालरा, श्री सुभाष श्योराण श्री गजराज सिंह आर्य, श्री सत्य भूषण आर्य आदि के सहयोग से शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती विमला ग्रोवर प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद ने की व कुशल संचालन श्री जितेन्द्र सिंह आर्य ने किया। शिविर में 135 आर्य युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल का जन्मोत्सव सोल्लास सम्पन्न

जातिवाद मुक्त समाज की स्थापना शहीदों को सच्ची श्रद्धांजली- डॉ. अनिल आर्य

मंच पर बाएं से श्री राम कुमार सिंह, बहन गायत्री मीना, कै. अशोक गुलाटी, डॉ. अनिल आर्य व वीर पाल विद्यालंकार। द्वितीय चित्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य दीप प्रजज्वलित करते हुए।

नोएडा। बुधवार 11 जून 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली एवं आर्य समाज नोएडा के संयुक्त तत्वावधान में ऐमिटी ऑडिटोरियम, सैक्टर–44, नोएडा में अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का 118 वॉ जन्मोत्सव सौल्लास मनाया गया। इस अवसर पर आर्य युवकों ने राष्ट्र रक्षा की शपथ ली।

समारोह अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने आह्वान किया कि जातिवाद मुक्त समाज की संरचना ही शहीदों को सच्ची श्रद्धांजली है। उन्होंने कहा कि देश की आजादी में जेल जाने वाले लोग 80 प्रतिशत आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द की विचारधारा से ओत–प्रोत थे। आज देश में नक्सलवाद, आतंकवाद एवं अलगाववाद बढ रहा है। देश के जिम्मेदार लोग देश–द्रोही बयानबाजी करके देश को कमजोर कर रहे हैं और कहीं विश्वविद्यालयों में पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लग रहे हैं। यह अतयंत दुर्भाग्यपूर्ण है। परिषद् अध्यक्ष ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी से मांग की कि जो व्यक्ति भारत का अन्न–जल ग्रहण करके देश द्रोही बात करके, देश को गुमराह करता है उसको सख्ती से कुचला जाये। एक प्रस्ताव पारित करके सर्व सम्मति से मांग की कि पं. रामप्रसाद बिस्मिल एवं अन्य क्रांतिकारियों का इतिहास पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाये ताकि नई युवा पीढी उससे प्रेरणा ग्रहण कर सके।

आर्ष गुरूकुल नोएडा से पधारे आचार्य जयेन्द्र जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश एवं उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज से अनेकों वीर पुरूषों ने प्रेरणा प्राप्त की तथा देश को आजाद कराने के लिए अपना योगदान दिया। उन नौजवानों में अग्रणी थे – पं. रामप्रसाद बिस्मिल जिन्होंने आर्य समाज शहाजहांपुर में स्वामी सोमदेव जी से प्रेरणा प्राप्त कर देश को आजाद कराने के लिए क्रान्तिकारी आंदोलन खडा किया तथा भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्लाह खान आदि क्रान्तिकारियों के नेता बने तथा देश से अंग्रेजों को भागने पर मजबूर कर दिया।

शिविर संयोजक महेन्द्र भाई जी ने 275 आर्य युवकों को यज्ञ करना सिखाया एवं वेद मंत्रों का उच्चारण व महत्व बताया। परिषद् के शिक्षकगण सौरभ गुप्ता, आशीष, कृष्णपाल सिंह, त्रिलोक उमराव, योगेन्द्र आदि द्वारा योगासन, प्राणायाम, नैतिक शिक्षा, पी0टी0, जूडो–कराटे, दण्ड–बैठक, आत्म–रक्षा प्रशिक्षण, नेतृत्वकला, भाषण कला, भारतीय संस्कृति, संध्या–यज्ञ, देश भक्ति की भावना आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

वैदिक विद्वान डॉ. वीरपाल विद्यालंकार व राष्ट्रीय मन्त्री श्री प्रवीण आर्य ने कहा कि परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति मानव का मुख्य आहार है शाकाहार। जैसा गीता में भी कहा है जिसका आहार–विहार–विचार–संस्कार युक्ति मुक्त प्राकृतिक एवं स्वाभाविक होता है वही व्यक्ति योगी कहलाता है।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक आचार्य भानूप्रकाश जी ने युवकों को अनुशासन, आदर्श, स्वास्थ्य लाभ के तरीके बताये एवं ईश्वर भक्ति व देश–भक्ति के मधुर भजनों से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। आर्य समाज नोएडा की महिला प्रधाना गायत्री देवी एवं योगेन्द्र शास्त्री जी ने अपनी भावभीनी कविता के माध्यम से महा क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन पर प्रकाश डाला। समारोह का कुशल संचालन आर्य समाज नोएडा के प्रधान कैप्टन अशोक गुलाटी जी ने किया। इस अवसर पर सर्वश्री रामदेव, ओमवीर सिंह, विश्वनाथ आर्य, रामेश्वर शास्त्री, यज्ञवीर चौहान, गौरव, हर्ष बवेजा आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

आचार्य भानुप्रताप शास्त्री (बरेली) का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य, डॉ. जयेन्द्र आचार्य, कै. अशोक गुलाटी, श्री महेन्द्र भाई, श्री रामकुमार सिंह, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, बहन गायत्री मीना। द्वितीय चित्र में आर्य युवक एवम आर्य जन कार्यक्रम का श्रवण करते हुए।

होडल (पलवल) में युवक चरित्र निर्माण शिविर का शुभारम्भ

सोमवार 2 जून 2014। आर्य युवक परिषद पलवल के तत्वावधान में युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में युवक चरित्र निर्माण शिविर का महर्षि दयानन्द स्मारक केन्द्र वन्गचारी, मधुरा रोड, होडल में शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. अनिल आर्य का अभिनन्दन करते श्री कृष्ण पाल खेत्रपाल। द्वितीय चित्र में आर्य युवक श्रवण करते हुए। इस अवसर पर समाजसेवी श्रीमती चमेली देवी, लाला मेघ राज आर्य, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य, श्री अनिल हांडा, श्री ओम प्रकाश काटारिया, विवेक भाटिया, श्री तुला राम सिंह, श्री बुध राम आदि उपस्थित थे। शिविर में 150 आर्य युवक प्रशिक्षण ले रहे हैं।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970